	बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय **बाँदा – २१०००१ (उ०प्र०)** **Banda University of Agriculture & Technology, Banda- 210001 (U.P.)**
मौसम आधारित कृषि सलाह **(Agro-Weather Advisory Bulletin No.:132 /2025) Year: 7th**	
जिला: बाँदा	**जारी करने की तिथि: 20.06.2025**

क्रम सं	विभाग	सलाह
1-	शाक-भाजी	➢ संभावित अधिक तापमान के मद्देनजर कद्दू वर्गीयए बैगनए टमाटरए मिर्च तथा भिंडी की खड़ी फसलों में मृदा जल एवं खरपतवार प्रबंधन करें। ➢ ग्रीष्म कालीन उत्पाद हेतु रोपित टमाटरए बैगन व मिर्च की फसलों में समुचित नमी बनाए रखें ताकि अत्यधिक तापमान से पुष्पपतन कम हो। ➢ मिर्चए टमाटरए बैगनए भिंडी में सफेद मक्खी व अन्य चूसने वाले कीट आने की संभावना है अतः उपयुक्त कीटनाशी से पादप सुरक्षा करें। ➢ ग्रीष्म ऋतु की फसलों में मृदा नमी संरक्षणहेतु सूखी घास या पुआल का पलवार प्रयोग करें। ➢ वर्षा ऋतु में सब्जियों की खेती के लिए चिन्हित खेतों की जुताई कर दें ताकि रोग कीट तथा खरपतवार के बीज नष्ट हो जाय।
2-	शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन	***शस्य-प्रबंधन*** ➢ सही समय पर उपयुक्त बिधि से बुवाई, उपपलब्ध भूमि एवं जलवायु तथा संसाधनों के अनुसार फसलों एवं उनकी प्रमाणित किस्मों का चयन, मृदा परीक्षण के आधार पर उचित समय पर पोषक तत्वों का इस्तेमाल, फसल की क्रांतिक अवस्थाओं पर सिंचाई, आवश्यकतानुसार जलनिकास, पौध संरक्षण के आवश्यक उपाय के अलावा समय पर कटाई, गहाई और उपज का सुरक्षित भण्डारण तथा विपणन बेहद जरूरी है। ➢ जून माह का अंतिम पखवाड़ा किसान भाइयों एवं आम जनजीवन में नई आशा और उमंग लेकर आता है क्योंकि आसमान में बादल छा जाने से ग्रीष्म की तपन कम होने लगती है! ➢ खरीफ फसलों के लिए खेत की तैयारी, भूमि के प्रकार और आवश्यकता के अनुरूप फसलों और उनकी उन्नत किस्म के बीजों का चयन करते हुए सही समय पर बुआई के लिए किसान भाइयों को चौकन्ना होकर योजनावद्ध तरीके से कार्य करना होगा तभी उन्हें उनके कठिन परिश्रम और लागत का उचित प्रतिफल प्राप्त हो सकेगा। ➢ मोटे अनाज जैसे बाजरा की मानसून सत्र की पहली अच्छी वर्षा पर बुवाई शुरू कर दें।

		➢ बीज की मात्रा 4–5 किग्रा बीज प्रति हैक्टेयर की दर से प्रयोग करें। फसल की बुवाई कतारों करें तथा बीज बोने की गहराई 4 सेमी रखना चाहिए । ➢ इस फसल की बुवाई माह के अन्तिम सप्ताह से शुरू करें तथा जुलाई के प्रथम सप्ताह तक पूरी कर लें। बोआई हमेशा कतारों में कुंड एवं मेड विधि से करना लाभदायक होता है। अच्छे जलनिकास वाली हलकी दोमट भूमि इस फसल के लिए उपयुक्त होता है। ➢ माह के अन्तिम सप्ताह में पर्याप्त नमीं की दशा में अरहर की बुवाई करें । प्रति हैक्टेयर 18–20 किग्राण् बीज पर्याप्त होता है। बुवाई कतारों में 45–60 सेमी की दूरी पर करें। पौधों के मध्य 15–20 सेमी् का फासला रखें। मूंगए उड़द की बुवाई इस माह संपन्न करें। इन फसलों की बुआई हेतु प्रति हैक्टेयर 18.20 किग्राण् बीज की आवश्यकता होती है। बुवाई कतारों में 30 सेमी् की दूरी पर करें। बुवाई के समय 20–25 किग्रा नत्रजन, 40–50 किग्रा फास्फोरस तथा 15...20 किग्रा0 पोटाश प्रति हैक्टेयर की दर से कतारों में दे । जलनिकास का उचित प्रबंधन अवश्य करें। ➢ धान की सीधी बोआई– जिन किसान भाइओं के पास सिचाईं के साधन खेत समतल व सीडड्रिल की व्यवस्था है वह किसान भाई सीधी बोआई कर सकते है। ➢ किसान भाई धान की सीधी बोआई जून के महीने में कर सकते हैं। इससे किसानों को नर्सरी लगाने व रोपाई में मजदूर के प्रयोग करने में लगात की कमी होगी। ➢ धान की बुआई खेत में पलेवा करके भी कर सकते है अथवा सूखी विधि में भी बुआई करके सिचाईं कर सकते है। प्रमाणित बीज को किसी विश्वसनीय संस्थान से खरीदें व उपचारित कर लें। ➢ बोआई में उवर्रक 120:60:40 (एन.पी.के.) किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें। इसके लिये 66 किलोग्राम एम.ओ.पी. को बुआई से पहले खेत में बिखेर कर जताई करें। संकर धान का बीज 15 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर व सामान्य बासमती का धान का बीज 25–30 किलोग्राम/हेक्टेयर की दर से सीडड्रिल के माध्यम से बुआई करें। सीड ड्रिल में 130 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से डी.ए.पी. को सीडड्रिल से दें। ➢ बुआई से पहले सीडड्रिल को कैलिब्रेट कर लें। धान की बुआई 2–3 सेमी0 की गहराई पर करें। ➢ बुआई के बाद अंकुरणपूर्व खरपतवारनाशी पेन्डीमिथाइलीन 3.0 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से स्प्रे करें अथवा 2.5 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से प्रेटिलाक्लोर (सोफिट) का स्प्रे करें। ➢ वर्षा ऋतु के प्रारम्भ हो जाने पर धान की पौध लगाने का सही समय 15 जून से 30 जून तक है। विलम्ब करने पर रबी की फसलों की बुआई में देरी होगी। ➢ उत्तम उपज वाली किस्म का चुनाव करें व इसे प्रमाणित संस्थाओं से ही खरीदें। बीज को बुआई से एक दिन पहले फफूंदीनाशक व कीटनाशक से उपचारित कर लें। ➢ नर्सरी का क्षेत्र सिंचाई के पास वाला चुनाव करें। ➢ 300 से 400 वर्गमीटर का क्षेत्र एक एकड़ में धान की रोपाई के लिये उचित होता है। इसे जुताई करके तैयार कर लें। इसमें 2 कुन्टल गोबर की खाद बुआई से 20–25 दिन पहले डालें व जुताई कर अच्छे से खेत में मिला दें। ➢ 20–40 ग्राम/वर्ग मीटर (10–16 किलो0/300–400 वर्ग मीटर) के हिसाब से बीज की मात्रा का प्रयोग करें। ➢ अंकुरित बीज को नर्सरी क्षेत्र में बिखेर दें तथा पक्षिओं से बचाव करें। ➢ हल्की सिचाईं लगायें तथा नर्सरी क्षेत्र में नमी बनाये रखे। ➢ आवश्यकतानुसार खरपतवारनाशी व कीटनाशक का प्रयोग करें। ➢ रोपाई से पहले अगर नर्सरी में हल्के पीले (कागज की तरह सफेद लक्षण) आयें तो 0.5 प्रतिशत फेरस सल्फेट का उपयोग करें।

		➢ 20–25 दिन पुरानी या 14 सेमी0 लम्बी पौध का प्रयोग रोपाई के लिये करें। ***मृदा-प्रबंधन*** ➢ जिन किसान भाईयों ने कम्पोस्ट बनाने हेतु गढ्ढा (पिट) अथवा नाडेप संरचना बना रखी है वर्षा से पूर्व भरना सुनिष्चित करें। ➢ वर्षा के दौरान होने वाले मृदा क्षरण एवं मृदा कटाव को रोकने हेतु वर्षा से पूर्व अपने – अपने खेतो का मेड बंधान सुनिष्चित करें। ➢ जिन किसान भाईयों ने गोबर की खाद को अभी तक खेतों में नही पहुचाया है वो किसान भाई अतिष्रीघ्र यह कार्य पूर्ण करलें। ➢ विगत में मिट्टी परीक्षण हेतु भेजे गये मृदा नमूना परीक्षण की रिपोर्ट एकत्र कर नजदीकी कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों से चर्चा कर खरीफ फसलो हेतु फसलानुसार उर्वरको की व्यवस्था करें। ➢ जो सब्जी फसलें अभी भी खेतों में है उनमें आव**शय**कतानुसार पोषक तत्वों का प्रयोग करें।
3-	**पशुपालन प्रबंधन**	➢ गर्मी में मुर्गीपालन करने वालों के लिए आवश्यक है कि तापमान की तेजी से मुर्गियों को बचाया जाए, क्योंकि गर्मी अधिक बढ़ने से मुर्गियों की मृत्युदर बढ़ सकती है। ➢ गर्मी से होने वाले स्ट्रेस को कम करने के लिए चूजों के फार्म पर पहुँचते ही एलेक्ट्रल पाउडर व ग्लूकोस वाला पानी पिलायें, चूजों को 5–6 घंटे तक यही पानी पीने को दें। ➢ पानी के बर्तन उचित संख्या में लगायें–100 चूजों के लिए 3–4 बर्तन। ➢ मुर्गी के शेड को हवादार बनायें रखें. पर्दों को दिन–रात दोनों समय खुला रखें। ➢ मुर्गियों को 1– 1.5 किलो होते ही बिक्री शुरू कर दें। ➢ इसके अलावा, मुर्गियों को दिए जाने वाले दाने को गीला कर सकते हैं। गीला दाना ठंडा होगा जिसका मुर्गियां ज्यादा सेवन करेगी। परंतु ध्यान रखें कि गीला किया दाना शाम तक खत्म हो जाए वर्ना उसमें बदबू आ सकती है।दाने की बोरी को कभी भी गीला न करें। ➢ फार्म में बहुत ज्यादा मुर्गियां नहीं पालें हो सके तो शेड के क्षमता से 20 प्रतिशत कम मुर्गियां रखें। ➢ मुर्गियों की छत का गर्मी से बचाने के लिए छतपर घास व पुआल आदि को डाल सकते हैं. या छत पर सफेदी करवा सकते हैं. सफेद रंग की सफेदी से छत ठंडी रहती है। ➢ चूजों को रखने से पहले शेड को अच्छे से साफ करें और शेड के अंदर–बाहर चूना का छिड़काव करें। ➢ मुर्गियों में अधिक मृत्युदर होने से मुर्गीपालकों को भारी वित्तीय हानि उठानी पड़ सकती है। गर्मी के मौसम में थोड़ी सावधानी से मुर्गियों को तेज गर्मी के प्रकोप से बचाया जा सकता है और अधिक से अधिक लाभ कमाया जा सकता है।
4–		➢
5–	**पादप रोग प्रबंधन**	➢ किसानों को फसलों में होने रोगों से बचाव हेतु निम्नलिखित सलाह दी जाती है: ➢ फसल: धान (रोपाई की अवस्था) ➢ संभावित रोग: झुलसा रोग (लक्षण: पत्तियों पर छोटे भूरे रंग के धब्बे जो बाद में आंख के आकार के हो जाते हैं। रोग बढ़ने पर पत्तियां और पौधे सूख सकते हैं।

		➢ प्रतिरोधी किस्मों का चयन करें। ➢ रोपाई के बाद खेत में अत्यधिक नमी ना होने दें। ➢ ट्राइक्लाजोल / 0ण्6 ग्राम/लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। ➢ फसल: मूंगफली / सोयाबीन ➢ संभावित रोग: पर्ण चित्ती रोग लक्षण: पत्तियों पर गोलए भूरे या गहरे रंग के धब्बे। रोग बढ़ने पर पत्तियाँ झड़ने लगती हैं। ➢ रोग प्रभावित अवशेष नष्ट करें। ➢ क्लोरोथैलोनिल या मैनकोजेब / 2ण्5 ग्राम/लीटर पानी में छिड़काव करें। ➢ फसल: तिलहन ;तिल) ➢ संभावित रोग:पत्तियों का झुलसन रोग लक्षण: किनारों से सूखती हुई पत्तियाँए पत्तियों पर असमान भूरे धब्बे। प्रबंधन: ➢ बीजोपचार कार्बेन्डाजिम / 2 ग्राम/किग्रा बीज से करें। ➢ रोग प्रकट होने पर हेक्साकोनाजोल या प्रोपिकोनाजोल / 1 मि.ली./लीटर में छिड़काव करें। ➢ फसल: सब्ज़ियाँ (टोमेटोए भिंडीए लौकी आदि) ➢ संभावित रोग: झुलसा रोगए डैम्पिंग-ऑफ लक्षण: पौधों के तने की सतह पर काले/भूरे घेरेए पौधों का गिरना या मुरझाना। ➢ जल निकासी की उचित व्यवस्था करें। ➢ ट्राइकोडर्मा युक्त जैवफफूंदनाशक का बीज व मृदा उपचार करें। ➢ कापर ऑक्सीक्लोराइड / 2ण्5 ग्राम/लीटर पानी में छिड़काव करें। ➢ फसल: आमए अमरूद जैसे फलदार वृक्ष ➢ संभावित रोग: एन्थ्रेक्नोज/पत्ती झुलसा लक्षण: पत्तियों और फलों पर काले धब्बेए फल गिरना। ➢ रोगग्रस्त शाखाओं की छंटाई कर जला दें। ➢ 1: बोर्डो मिश्रण या कापर ऑक्सीक्लोराइड का छिड़काव करें। ➢ खेत में खरपतवार नियंत्रण रखें। ➢ अधिक नमी और जलभराव से बचें। ➢ बीजोपचार को अनिवार्य रूप से अपनाएं। ➢ जैविक नियंत्रण हेतु ट्राइकोडर्मा का प्रयोग करें।
6.	**बागवानी. प्रबंधन**	जून माह में अधिक गर्मी एवं शुष्क होने के कारण काफी सावधानियां अपनानी चाहिए। इस माह में फलों का अधिक गिरना, छालजलन, पत्तियों का झुलसा तथा सिंचाई की भी अधिक आवश्यकता होती है। यहां तक कि छोटे पौधों का झुलसा भी अक्सर देखा गया है। इस कारणवष बाग मालिकों को पौधों में सुचारू नमी बनाने की आवश्यकता है। भूमि की नमी को बनाये रखने के लिए भी आवश्यक कदम उठाने की जरूरत है। खरपतवार को भी निराई – गुड़ाई द्वारा या खरपतवारनाशी दवाओं द्वारा नियंत्रण में रखना चाहिये। नये बाग लगाने की योजना तथा रेखांकन कार्य भी इसी

माह में करने की आवश्यकता है ऐसी परिस्थितियों में बताये जा रहे सुझावों के अनुरूप ही कार्य करें।नये बाग के रोपण हेतु प्रति गड्ढा 30–40 किग्रा सड़ी गोबर की खाद, एक किग्रा नीम की खली तथा आधी गड्ढे से निकली मिट्टी मिलाकर भरें। गड्ढे को जमीन से 15–20 सेमी. ऊँचाई तक भरना चाहिए।

केला की रोपाई के लिए उपयुक्त समय है। रोपण हेतु तीन माह पुरानी, तलवारनुमा, स्वस्थ व रोगमुक्त पुत्ती का ही प्रयोग करें। पुत्तीयों के ऊपरी तानें की कंद से 25 से 30 सेंटीमीटर पर काट दें। रोपाई से पूर्व सभी पुत्तीयों को 1 ग्राम बविस्टीन प्रति लीटर पानी के घोल में उपचारित कर ले। रोपाई के समय केवल कंद भाग को ही मिट्टी में दबाए तथा रोपाई के बाद सिंचाई कर दें। पपीते में सितंबर–अक्टूबर में लगाए गए पौधों में अतिरिक्त नर पौधों को निकाल दे। पुराने बागों में इंटरक्रॉपिंग के रूप में हल्दी व अदरक बोआई करें। बेर में कटाई–छटाई का कार्य कर ले। आम में ग्राफ्टिंग का कार्य करें।

तेज गर्मी से बचाव :–

तेज गर्मी से बचने के लिए पौधों के मुख्य तने पर चूने तथा नीले थोथे का लेप करें। घोल बनाने के लिए कापर सल्फेट 2.5 किलोग्राम, बुझा हुआ चूना 5 किलोग्राम, सरेश 1/2 किलोग्राम तथा पानी 30 लीटर प्रयोग करें। यदि बाग में जंतर या ढैंचा है तो पानी देकर इसकी बढ़वार बढ़ा दें।

सिंचाई व्यवस्था :–

अत्यधिक गर्मी के कारण पानी की मात्रा को पौधो में बनाए रखने के लिये सिंचाई पंद्रह दिन के अन्तराल पर अवश्य दें। यदि बूंद–बंदू सिंचाई द्वारा बाग चलाया जा रहा है तो उसकी उम्र के हिसाब में निम्नलिखित मात्रा में पानी दे। ऐसा करने से फलों का गिरना भी रूक जाएगा। बाग में पानी हमेशा शाम होने के बाद लगायें तथा गलत दिशा में बह रहे पानी से होने वाले नुकसान का पूरा ध्यान रखें। पानी की उपलब्धता के अनुरूप ही बाग का विस्तार किया जाना चाहिये।

मलचिंग द्वारा भूमि जल संरक्षण :–

भूमि को पॉलीथिन शीट द्वारा, पराली द्वारा, चने के नीरे द्वारा या भुई द्वारा ढकने से भूमि जल को वाष्पीकृत होने से बचाया जा सकता है। परन्तु ध्यान रहे कि पराली वगैरह से ढकने पर सूख होने के कारण इसमें आग लगने या दीमक के आने की संभावना रहती है। अतः इससे बचने के लिए सावधानी बरतें।

बाग में हल जोतना :–

जून माह में बाग की भूमि को जोतना अतिआवश्यक है ताकि खरपतवारों का पूरी तरह से नष्ट किया जा सके तथा भूमि की ऊपरी परत ढीली करने पर यह मल्च का काम करें। ऐसा करने पर कीट व्याधि पर भी नियंत्रण पाया जा सकता है।

नींबू प्रजाति के बागो में खरपतवार नियंत्रण के लिए खरपतवारनाशी दवाओं का प्रयोग भी किया जा सकता है।

नर्सरी (पौधशाला) के कार्य :–

- सिंगल स्टेम ट्रेनिंग :– नींबू प्रजाति में खट्टी को सधाई देने के लिए सभी फुटान को हटा दें। (षीर्ष फुटान को छोड़कर) ताकि बरसात के मौसम में इस पर बडिंग या ग्राफिटिंग की जा सकें।
- बारामासी नींबू की 2.5 सेमी हार्डवुड टहनियों को पांच से आठ इन्च लम्बी काटकर इस माह के अंत में लगा दें।
- फालसे का बीज भी इस माह के दूसरे पखवाड़े में क्यारियों में बीज दें।
- पौधशाला में हर दूसरी सिंचाई के उपरान्त निराई–गुड़ाई अवश्य करें।

		➢ आम और अमरूद के पौधों में बरसात में इनार्चिंग कराने के लिए बीजू पोधों को गमले में लगा देवें ताकि एक से डेढ महीने बाद इन पौधों पर पैबन्दी (प्रवर्धन) किया जा सके। फल पौधों पर 0.6 प्रतिषत बोरक्स का छिड़काव करें। ➢ बेर में 15 जून तक पौधों की वार्षिक कॉट–छॉट करावें। गमले की सफाई कराकर गोबर की खाद एवं उर्वरक देकर सिंचाई करें प्रति पेड़ लगभग 60–80 किलोग्राम गोबर की सड़ी खाद डाले। सुपर 100 ग्राम से 500 ग्राम (पौधे की आयु) के हिसाब से दे। ➢ नीम्बूवर्गीय फलः फलदार पदों में नाईट्रोजन व पोटाश की दूसरी मात्र का प्रयोग करें.ा ➢ अंगूर की फसल में पक्के हुए गुच्छों को तुड़ाई कराकर प्रत्येक गुच्छे में से सडे फल तथा कच्चे फल की कॉट छांट–कर बाजार में बेचें। नई बेल में 80–90 ग्राम यूरिया प्रति बेल हर दूसरी सिंचाई पर देते रहे व फालतू बढ़वार रोकते रहे। ➢ अमरूद के नये पौधें को गर्मी व लू से बचाये और सिंचाई अवष्य करें। ➢ आडू के नये पौधे के तने के साथ मिट्टी अवष्य चढ़ायें। ➢ बागो में सिंचाई नियमित रूप से करते रहे। छोटे पौधों को गर्मी व लू से बचायें।
7.	**वानिकी प्रबंधन**	➢ गर्म मौसम को ध्यान में रखते हुए वानिकी पौधशाला के नर्सरी पौध की सुरक्षा एवं समुचित विकास हेतु छाया की उचित व्यवस्था तथा सायंकाल नर्सरी में नियमित सिंचाई करने की सलाह दी जाती है। ➢ कृषि वानिकी प्रणाली के तहत लगाए गए दो–पांच साल के पेड़ों को पलवार करना (घास–पात से ढकना) की सलाह दी जाती है ताकि मिट्टी में नमी बरकरार रहे। ➢ ग्रीष्म लहर के दौरान पेड़ों की अनावश्यक छंटाई या प्रत्यारोपण से बचें। ➢ नर्सरी (पॉलिथीन) थैलियों में भरे जाने वाले पॉटिंग मिश्रण में खाद ६ कंपोस्ट खाद, बालू व छनी हुई मिट्टी का अनुपात क्रमशः 1:2:3 रखें, यदि चिकनी मिट्टी की मात्रा अधिक है तो उसमें बालू रेत की मात्रा को आवश्यकता अनुसार बढ़ा दे। जो किसान भाई चिरौंजीध्चार, तेंदू और सलई गोंद नर्सरी पौधों को उगाने में रुचि रखते हैं, तो यह सही समय वनक्षेत्र से पके फलों को इकट्ठा करने का है।

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल–

1. डॉ जी. एस. पंवार	6. डॉ दिनेश गुप्ता
2. डॉ दिनेश साह	7. डॉ पंकज कुमार ओझा
3. डॉ ए.सी. मिश्रा	8. डॉ सुभाष चंद्र सिंह
4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव	9. डॉ जगन्नाथ पाठक
5. डॉ राकेश पाण्डेय	10. डॉ धर्मेन्द्र कुमार
6. डॉ मयंक दुबे	